Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीहरिः

श्रीराम-यश-चन्द्रिका

कवित्त

गंडकी के घाट पय पीवन गयौ हो गज,
तहाँ आय दुष्ट ग्राह ग्रस्यौ सो पगन मैं ।
'आरत-पुकार सुनौ, बिरद बिचारि, मोहिँ,
आतुर उबारि, नाहिँ पावत भगन मैं' ॥
साँची प्रीति जानि, छलसाल, चक्र-पानि आनि,
काट्यौ गज-फंद, नाम जाहिर जगत मैं ।
आधो नाम लेतनहीं छन में उबारि लियौ,
साँकरे में 'रा' कह्यौ औ 'म' कह्यौ मगन मैं ॥ १ ॥

राम कह्यौ सदन, कबीर राम-राम कह्यौ,
राम रैदास कह्यौ परमपदु पायौ है ।
राम कह्यौ गज जब रज में मिलन लाग्यौ,
पाछैं परी टेर आपु अग्रहीं सिधायौ है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्राह तें छुड़ाय पुचकारि पार ठाढ़ो कियौ,
छत्रसाल राज ऐसो बिरद बढ़ायौ है।
राम कहौ, राम कहौ, भूलि जनि जाव कोऊ,
राम के कहैयनि में कानैं दुख पायौ है॥ २॥
चंदन सौ दानी है, प्रमानीं चार छंदन सो,
नामी जग-बंदन सौ, फंदनि छुड़ावनो।
ग्यानी होत यासों, महाध्यानी होत या के लियें,
पंडित पुरानी होत, मंगल-बढ़ावनो॥
प्रेम होत यासों, जोग-छेम होत यासों, सर्व
नेम होत यासों, जन-मानस-जुड़ावनो।
कहै छत्रसाल, प्रतिपाल करै दीनन कौ,
राम सौ प्रतापी नाम राम कौ सुपावनो॥ ३॥
गौतम की नारी महापातकिनि तारी, त्यौंहीं
ताड़का सँहारी, पच्छ भारी करियतु हैं।
कहै छत्रसाल, त्यौं पवित्र कीनो केवट कों,
मित्र कीनो बानर, चरित्र चरियतु हैं॥
बालमीकि साधु कीनो, गीध कौ सराध कीनो,
मुकत बिराध कीनो, ब्याधि हरियतु हैं।
एती सुनि बातैं नातें अधम-उधारन के,
यातें, राम! रावरे गरैंई परियतु हैं॥ ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया

तात तज्यौ अरु मात तज्यौ, पुनि भ्रातनैं आसन तें उतरायौ।
त्यौं, छत्रसाल, तज्यौ सबहीं, बिधि-पुत्रनैं मंत्र पवित्र सुनायौ॥
सो सरनागत-वत्सल के सरनागत होत भयौ मन-भायौ।
चाहत हो ध्रुव ज्यौं ध्रुव धाम सो त्यौं ध्रुवनैं ध्रुव धाम कों पायौ॥५॥
जैसी करी, जू! करी के कलेस में, जैसी करी सँग गौतम-दार की।
गीध औ ब्याध कों जैसी करी, करी जैसी धना, सदना औ चमार की॥
ऐसिहीं जानिकैं सेयौ तुम्हैं, छत्रसाल कहै अपने प्रतिपार की।
जो नहिं तारिहो मोहिं प्रभू! उठि कीरति जैहै दसों अवतार की॥६॥

कवित्त

सार सब सार कौ, बिचार निगमागम कौ,
निर्गुन सगुन कौ दुभाष-भाष भलु है।
यंत्र मंत्र तंत्र सो सुतंत्र राम-मंत्र सदा,
साधु-सुरधेनु, कामतरु-चारु-फलु है॥
कहै छत्रसाल, चारि चखनि निहारि अजौं,
सुमति सुधारौ, धारौ याहिं अविचलु है।
चलिगे, चलैंगे, जे चलत हैं प्रतीति मानि,
राम नाम ज्यो कों देत संतत कुसलु है॥ ७॥
चारि जुग आई चलि रीति परमेसुर की,
दासनि पै प्रीति, गीति गावैं चारि बेद है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदना त्यौं सुपच, सुभीलिनी, निषाद, धना,
गनिका औ गीध, अजामेल सों न भेद है ॥
साँचे साथ राचे राम, काँचे सों न राचे सुनौ,
साँचे प्रहलाद की प्रतीति की उमेद है ।
कहै छत्रसाल, जगदीस जाय करमा की
खीचरी कों पाय प्रथम कीनो नैबेद है ॥ ८ ॥
जोगिन कौ जीवन, सजीवन है रोगिन कौ,
भोगिन कों मुक्ति, मुक्ति बद्धनि सहाई, रे ।
छत्रसाल, मुंडधर-मानस-मराल, बाल-
इष्ट है भुसुण्डि कौ, अनिष्ट-दंड-दाई, रे ॥
महत मुनीसननैं, देव-ईस-ईसननैं,
जाकी कल कीरति कवीसननैं गाई, रे ।
सब सुख-धाम बसुयाम है अराम-धाम,
राम जपि, राम जपि, राम जपि, भाई, रे ॥ ९ ॥
बानर तें क्रोधी हौं, अबोधी महा गीधहू तें,
काग तें असोधी, यह सोधी दिसा दसु है ।
कहै छत्रसाल, हौं गजेन्द्र तें मदान्ध महा,
दस-मुख-बंध तें महान मोह-रसु है ॥
सौरी तें अयान, अजामेल तें अजान अहौं,
तुच्छ बिसराहु तें, न मेरो कहूँ जसु है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्याधहू तें, अधिक, बिराध तें बिरोधी, राम !
एते पै न तारौ तौ हमारौ कहा बसु है ॥ १० ॥

जानौं न बताय, गुन गायकैं न जानौं कछू,
काम क्रोध लोभ मोह द्रोह दीह दोसं हौं ।
कहै छत्रसाल, ईति-भाति की न भीति मानौं,
सत्रु की न भीति, भव-भीति कों न सोसें हौं ॥
करुना-निधान ! नित्य करहुँ तिहारो गान,
करिहौ सहाय जन जानि, मन पोसें हौं ।
हरिये त्रिताप पाप, सुनिये मो साफ-साफ,
हारे हर भाँति, राम ! रावरे भरोसें हौं ॥ ११ ॥

मेरे नैन जुगल चकोर, राम राका-ससि,
काय मन बचन बिलोकि सुख पावैंगे ।
अङ्ग-अङ्ग अमित अनङ्ग-छबि देखि-देखि,
द्वंद दुख भंजि भूरि आनँद बढ़ावैंगे ॥
छत्रसाल, मानस-नदीस बीस बिसे आजु,
अमिय अमन्द चारु चखनि चखावैंगे ।
मोह-भ्रम-जनित बिदारि तम-तोम अब
सीता-वर-चंद उर-मन्दिर बसावैंगे ॥ १२ ॥

जीती नाहिँ जाति बिषै-बासना अजीती महा,
देह जरा-जीती भई खारिज खरीती-सी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहै छलसाल, तुम रीती कों भरीती करौ,
रीती तुव बिदित भरीती करौ रीती-सी ॥
करहुँ अनीती नित्य छाँड़िकैं सुनीती, नाथ !
भोगौं भव-भीती, अन्त होयगी फजीती-सी ।
चरन-सरोज-प्रीती दीजिये प्रतीती राम !
राखि मन-चीती, जाति बैस यौंहिं बीती-सी ॥ १३ ॥
भूतनकों पूजि-पूजि चाहत बिभूत, अरे !
धूतन के सङ्ग काम करत कपूती के ।
काय-मन-बचन गँवायें देत औसर तैं,
खात बिष काहे छाँड़ि अमृत, निपूती के ॥
सर्व-उर-बासी सर्वजगत-प्रकासी राम-
नाम सुख-रासी धारौ धर्म मजबूती के ।
आलस में, अनख में, भाव में, कुभावहू में*
छलसाल, कहौ, करौ काम रजपूती के ॥ १४ ॥
चौदा चौक पहर† पहार धरि राख्यौ कर,
राख्यौ ब्रज साको मारि मान मघुवा कौ, जू ।
भूल्यौ बलि भूप निज बिक्रम, अनूप देखि
त्रिजग त्रिविक्रम कौ रूप लघुवा कौ, जू ॥

---

* गो० तुलसीदास कृत 'भाव, कुभाव, अनख, आलसहू । राम जपत मङ्गल दिसि दसहू' के आधार पर रचा गया जान पड़ता है ।

† एक सप्ताह ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साधो सुन्यौ जो न प्रहलाद-हित साधो तौन,
नर-बपु आधो आधो बेष बघुवा कौ, जू।
रावन के अछत बिभीषन कों राज दियौ,
भूलियौ न, छत्रसाल, नाम रघुवा कौ, जू॥ १५॥
मीत कै सुकंठ कों जो दीनी बालि-बाला आपु,
वाहू तौ बताई खोजि सीता महरानि हैं।
कहै छत्रसाल, लङ्क दीनी जो बिभीषन कों,
लङ्का के सकल भेद दीने तेहि आनि हैं॥
कंचन कौ भौन जो सुदामा कों सँवारि दियौ,
वेऊ तौ चिन्हारीं चटसार की पुरानि हैं।
हम तौ तब जानिहैं कै हरि बड़े दानि हैं,
बिन पहिँचान जो वै हमैं पहिँचानि हैं॥ १६॥
केवट न सङ्ग, परी आय इत बेबट में,
बीचिनि बिलोरी अति सेवट अपार में।
कहै छत्रसाल, त्यों भरी है भूरि भारनि सों,
जाँजरी भ्रमै है भूलि भौंरनि बयार में॥
प्रन के पलैया, प्यारे! जगत-खिवैया! आजु,
निज जन जानि चित्त दैवी या सम्हार में।
पार में न कोऊ जौन आरत-पुकार सुनै,
हाय रघुराय! मम नाँव मँझधार में॥ १७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

 Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रलय-पयोनिधि लौं बहरा लगन लाग्यौ,
लहरा लगन लाग्यौ पौन पुरवैया कौ।
भारी बहु जाँजरी भरी है भूरि भारनि सों,
धीर न धरात छत्रसाल-से खिवैया कौ॥
महा पारावार परी अलख अगार माँझ,
कीजिये सम्हार आय आसु यहि नैया कौ।
बहन न पैहै घेरि घाटहिँ लगैहै फेरि,
अमित भरोसो मोहिँ राम रघुरैया कौ॥ १८॥

सरस-सुभग्रु-कञ्जु-बरन, प्रपन्नजन-
रंजन-करन, जे हरन भव-भीता के।
चंन्द्रचूड़ धारैं ध्याय हृदय-सरोज जिन्हैं,
हेरि-हेरि हारे मुनि गुननि पुनीता के॥
कहै छत्रसाल, बेद सकल सराहैं सदा,
ब्यास सनकादि सुक सारद सुनीता के।
असरन-सरन, अधार निरधारनि के,
बन्दौं पद-पदुम पवित्र राम-सीता के॥ १९॥

प्रबल अनेक जीते नीच छल-बल करि,
जैसें-तैसें जोरनि सों गाढ़े गढ़ लिये हैं।
कानन तें कंदर में केहरी करीनि आनि
आनि, छत्रसाल, निज बाहु-बल जिये हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आन के सदन लेत बदन फुलावत हौ,
पर-धन-हरन में हुलसत हिये हैं।
हाय-हाय ! निपट अभाग्य मंद मानुष के,
हिये माहिँ हरि बसैं, सो न बस किये हैं ॥ २० ॥
सेत भये केसनि के संत न गनाये जात,
पाई जाति जौलौं मन-बचन-मलीनता।
छत्रसाल, कैसें होत हंस बक छद्म किये,
जानिये बसंत आयें काक-पिक-लीनता ॥
जौलौं तन-वासिन की भूल में हौ परे भूले,
तौलौं नाहिं जैहै कैस्यौ पीन पराधीनता।
जौलौं सुद्ध सान्ति के समुद्र में न तैरहुगे,
स्याम कों न गाओगे न पाओगे प्रवीनता ॥ २१ ॥
गायबे कों, ध्यायबे कों, सेबे को, सुमिरिबे कों,
तीनि लोक पायबे कों राम-नाम राजु भो।
मातु-पितु-बंधु-हित, आपुनो-परायो-हित,
बीस बिसे ईस अनुकूल आय आजु भो ॥
धरम-धुरीन श्रीरकार, छत्रसाल, छत्र,
मुकुट मकार सब-बरन-सिर-ताजु भो।
जाके नाम राज कों बिराजतु समाज धर्म,
सकल सुकर्मन कौ जाहिर निवाजु भो ॥ २२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम-पद-पंकज की रज की बलायें लैहुँ,
जानैं रिषि-पतनी की पत नीकी राखी है।
पाप परिताप पति-साप की न राखी भय,
छत्रसाल, अजहूँ निगमागम साखी है॥
दंडक-बिपिन कृतकृत्य भयौ जाहीं रज,
जानि बकसीस गज सीस धरि राखा है।
तिलक विलोक-सीस ताकों आनि मानस में,
जानि परी बिसे बीस, ईस अभिलाखी है॥ २३॥
प्रेम मन जाके ताकों सब सुख-ऐन जानौ,
सकल पुराननि बखान्यौ, छत्रसाल, है।
सौरी, भील, कील, बालमाक बृषली की कथा,
लिखी है, लखी है जहाँ-तहाँ की सुचाल है॥
गीध, अजामेल, तेलनी की नीकी प्रीति जानि,
होतहीं बिहान पाई खीचरी कृपाल है।
नातो एक भक्ति कौ है साँचो भक्त-पालजू कैं,
देखौ कहँ जौन, कहाँ सुपच-हवाल है॥ २४॥
सदना के बँधना के पानी में न मान्यो भेद,
रैदसा कैं न्योते, मनों जान्यौ सगो नतुवा।
धना कौ जमायौ खेत बीज बिनु, ऐसो हेत,
जगत-बिदित कल कीरति कौ केतुवा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहै छत्रसाल, मित्र कीनो क्रूर केवट कों,
लीनो ताहिँ अंक में पसारि दोऊ हतुवा[१] ।
मेवा षटरसनि तें अधिक सराहे पाय,
सवरी के बेर और बिदुर कौ भतुवा[२] ॥ २५ ॥

हरिष हरी फिकरि पर-धन छीनि-छीनि,
बनिगो अवनि-पति दीननि सँतापी कों ।
कहै छत्रसाल, बालपन तें करे ए काम,
नित्य पर-बाम-रत, अनृत-अलापी कों ॥
करुना-निधान राम ! यह करतूत देखि
करि है को गौर छाँड़ि आपु-से प्रतापी कों ।
हेरियौ बिरद ओर, धरियौ न फेंट छोरि,
जोरि जुग पानि कहौं, मोसे घोर पापी कों ॥ २६ ॥

चाहनैं न बुद्धि बड़ी, सुद्धि अंग-अंगनि की,
जोग-जाग-रंगनि में रँगनैं न राई, रे ।
कहै छत्रसाल, कछू सीखनैं न सीख बड़ी,
दीखनैं न दीख तुक-अच्छरु-दिखाई, रे ॥
महत मुनीस सुर-ईस ईस-ईसनिनैं,
जाकी कल कीरति कवीसनिनैं गाई, रे ।

१. हाथ । २. बथुवा का साग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सूधो-सो सुनाम, बसुयाम है अराम-धाम,
राम जपि, राम जपि, राम जपि भाई, रे ॥ २८ ॥
देत जिन्हैं गारी जन बरसें न-बरसैं हूँ,
तिनहिँ बिसारि तौहू पूरन मया करैं ।
कहै छत्रसाल, लोक-पाल हैं सरन जाकी,
भरिकैं भरन सिर चरन नया करैं ॥
नारद मुनीस सनकादि सुर-ईस-ईस,
बिदित गिरीस नाम नितहीं लया करैं ।
राम रघुनायक बिसेष बरदायक ते,
होत हीं सरन जनदीन पै दया करैं ॥ २९ ॥
रचि-पचि हारे कवि-कोविद बिचारे सब,
सम्भु रहे ध्यान औ स्वयंभु रहे गान करि ।
व्यालपति रहे देखि ख्याल खूब फागनि कौ,
गौरि रही गोद लै गनेस सिर पानि धरि ॥
औध रही रंग-पूरि महकि सुगंध रही,
सरजू हू रही लाल-लाल रंग-स्रोत सरि ।
एक ओर कुँवरि-किसोरी, रही छत्रसाल,
एक ओर कुँवर-किसोर रहे रंग भरि ॥ ३० ॥
कौन है उदार राम-नाम-सो उधारवारो,
जाकी सासना में कामधेनु काम-तर है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बदत पुरान बेद-आगम कौ सार यहै,
नाम के प्रताप मारयौ मार देव-वर है ॥
बर्ननि कौ भूषन ए, बर्नत है छत्रसाल,
नाम ही के हाथ करामात चराचर है ।
नाम कौ प्रभाव भाव जानि गनराव नीको,
दायक दुनी कौ भयौ मंगल-सुघर है ॥ ३१ ॥
नर तें अधिक दौरैं पच्छी अंतरिच्छ माहिँ,
पच्छी तें अधिक दौरैं नीर नद भीर के ।
नीर तें अधिक दौरैं, छत्रसाल, सिंह बली,
सिंह तें अधिक दौरैं तीर रनधीर के ॥
तीर तें अधिक दौरैं पौन के झकोर जोर,
पौन तें अधिक दौरैं नैन या सरीर के ।
नैन तें अधिक दौरै मन तिहुँ लोकनि में,
मन तें अधिक दौरैं बाजि रघुबीर के ॥ ३२ ॥
सरन तुम्हारियै में परयौ हौं तुम्हारो जन,
पालौ, चहै घालौ, चहै लालौ, चहै जो करौ ।
नामी बदनामी, महा कामी क्रूर कामनि में,
अधम तमामनि में आम नाम मो परौ ॥
मेरी मात जानकी ! प्रमान की न मानौ जोपै,
बूझि किन देखौ रामैं, यामें न गुसा धरौ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेरो होय, छलसाल, तू त्रिलोकपाल ख्यात,
मेरो प्रतिपाल, मात ! तू बताव दूसरौ ॥ ३३ ॥
नाम-बल साँचो, जाकी ओट प्रह्लाद बाँचो,
नाम-बल साँचो बालमीक साखि साँचो है ।
नाम-बल धाम नित्य पायौ गज-गीधहूँनैं,
नाम के प्रताप सम्भु-सूनु रंग-राँचो है ॥
नाभा नामदेव नाम ही के बल नामी भये,
नाम कौ प्रताप बिधि बेदनि में बाँचो है ।
नाम-बल जाकैं साँचो सोई बली, छलसाल,
और सब काम काचो, काचो फेरि काचो है ॥ ३४ ॥
पतित-पुनीत राम-नाम कलि काम-तरु,
औढर-ढरन जग-तारन-तरन है ।
आरति-हरन जन-पोषन-भरनवारो,
बिरद बिलंद, दीह दोष कौ दरन है ॥
अधम-उधारन सुधारन धरा पै धर्म,
कारन सुकर्म कौ, उबारन बरन है ।
छलसाल-पाल है, कृपाल है, दया-निधान,
साँचोई दीनबंधु, असरन-सरन है ॥ ३५ ॥
तीज पर्व पावनि सुहावनि है आई आजु,
पूजन कौं सोमबट गोठि बनितान की ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानों घनस्याम कों रिझायबे अनेक बेष,
आईं चारु चंद्रमुखीं तुल्य तड़ितान की ॥
कैधौं कान्ति दीप-मालिका की चंद्र-मालिका की
एक ओर है करोर, एक ओर जानकी ।
जोरि-जोरि पानि सीता कहैं 'राम' छत्रसाल,
राम कहैं 'सीता' लैकैं बोदर* लतान की ॥ ३६ ॥
राम-पद-बिमुख कौ मुख न दिखावै राम,
छत्रसाल माँगतु है आठों जाम राम सों ।
जोरि-जोरि हाथ, माथ नाय राम-पायनि पै,
'पाहि पाहि !' कहौं हाहा खाय ऊँचे ग्राम सों ॥
खायबो गरल पै न जायबो निकेत वाके
भूलिहूँ भलो है, कहा परी वाके काम सों ।
होय जो प्रचेता तौहू जनम हराम वाकौ,
जन्म-जन्म राखिबी छतीस वाके नाम सों ॥ ३७ ॥

सवैया

नाम की कीरति राम कहैं नित, आननपंच, बिरंचि बखानी ।
त्यों गजतुण्ड, भुसुण्डि, गिरा, सुक, नारद, भूप छता रुचि मानी ॥
नाम निरंजन, अंजन राम, प्रमान-प्रमान औ प्रानहुँ-प्रानी ।
नाम लियें प्रभु बास करैं हिय, ज्यों गुन गागर सागर पानी ॥३८॥

* छड़ी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम-प्रताप बली सब भाँतिनि दासनि के दुख-दोष निवारै ।
दूरि करै जन-संकट-सोच औ आधि रु ब्याधि तें जीव उबारै ॥
भंजहि भीति औ ईति सबै, नित जीति रहै, प्रभु-प्रीति पसारै ।
मानस-पाप-कलाप कुकंटक, भूप छता, परितापहिँ जारै ॥३९॥

कवित्त

तारे, नाथ ! अधम उतारे भव-सिंधु-पार,
हारे का हमारे भारे कलुष सुनि-सुनिकैँ ?
कहत 'मुरारे ! हरे !' तारे पातकी-बरूथ,
नाम-बल, छत्तसाल, सुने पुनि-पुनिकैँ ॥
वारि-कन रज-कन सँवारि, हरि ! जानै को,
तारे आसमान के तिहारे गुन गुनिकैँ ।
हारे कहि तेरे गुन द्वै हजार जीह्वारे,
देव दै नगारे गावैँ गान चुनि-चुनिकैँ ॥ ४० ॥

सवैया

तीनि तेँ चौथो सुन्यौ न कबौं गुन, पाँच तें षष्ठ न तत्व बखान्यौ ॥
लोक चतुर्दस तेँ नहिँ पंद्रह बूझि छता चहुँ बेद जहान्यौ ॥
ते मिटि जाहिँ महापिरलै, तब तीनि स्वरूप कहाँ घर ठान्यौ ?
सो कहियौ, जू ! कृपा करिकैँ, कहुँ नाम-सो सार नहीँ पहिँचान्यौ ॥४१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवित्त

जानैं को जुगत सिंधु सिंधुर के तारिबे की,
असुर सँहारिबे की और की न गत है।
नीर, छिति, पावक, समीर, नभ, छत्रसाल,
राखै एक भाजन में कौन की सिपत है ?
लूम हनुमान कैसी बसन बढ़ाय जानैं,
बिपत बिहाय राखी द्रौपदी की पत हैं।
अगम अनंत वाही राम के प्रतापु आपु
थित है त्रिलोक, जाकी माया कौ न मित है ॥ ४२ ॥

बोले राय जनक सुभाय हत-आस, "हाय !
पैज इन भूपनि की पोच परि गई है !"
जोरि कर-कमल निहोरि कह्यौ कौसिक सों,
"दीजिये निदेस रामैं मेटि दुचितई है ॥"
जच्छ, जातुधन-पति, भूप दीप-दीपनि के,
आयकैं अतेज भये देखि रविमई है।
बिजय बिभूति करतूति, छत्रसाल, नाथ-
हाथ लगी करामात जाकी निरमई है ॥ ४३ ॥

बीर आन कौन है समान रघुबीरजू के,
कौन तीनि भौन ऐसो पूरन-कृपा हियौ ?

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौन सिला तारी, कौन सिंधु पै तराई सिला,
केवट कौं मित्र कै पवित्र गीध को कियौ ?
कौन देव सबरी कौं ऊँचो पद दैनवारो,
कौन गहि बाँह हीन रंक अंक में लियौ ?
प्रनत-कृपाल, छबसाल, रामचन्द्र छाँड़ि,
कौन कपि-भालु-दल मृतक जिवा दियौ ? ॥ ४४ ॥
सरद-ससांक कोटि, कोटि-काटि कंद्रपहूँ,
राम घनस्याम-छबि ऊपर निछोरियै ।
अखिल निकाई लोक-लोकनि की मंजुताई,
अंग-अंग ताईं, छबसाल कहै, थोरियै ॥
उपमा न आन, और सुषमा न आन कहूँ,
राम के समान राम-रूप-गुन जोरियै ।
मोरियै न मनहिँ निहोरियै न औरनि कौं,
तोरियै न नेह, रूप-सिंधु में हिलोरियै ॥ ४५ ॥
बेदनि कौ सार, औ अधार है पुरारि-ही कौ,
रंक औ गनी कौ नीको रच्छक दुनी कौ है ।
लोक-लोक-लीको, मोद-दायक, अमी कौ सिंधु,
लायक, सहायक जो साँचो द्रौपदी कौ है ॥
कहै छबसाल, हाल पालक हमारो, जानैं
बारन उबारयौ, गीध तारयौ जून जी कौ है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बालमीकि, व्यास, सुक, नारद बखान्यौ, ऐसो
बन्दौं राम-नाम सर्व बरननि टीकौ है ॥ ४६ ॥
संग लै सखान मणि-अद्रि के समीप भूला
भूलि रहे होड़ीं-होड़ाँ अवध-भुवाल हैं ।
सावन की तीज तजबीज करि जोरी जोरी,
स्याम-स्याम, गोरे-गोरे जोरे राज-बाल हैं ॥
भूलैं औ झुलावैं कोऊ पैंगनि बढ़ावैं गावैं,
देखि सुख पावैं सर्व लोक, लोक-पाल हैं ।
दीसैं ईस मुदित असीस बगसीसैं देत,
लेत बिसे बीसैं महामोद छत्रसाल हैं ॥ ४७ ॥
साख निगमागम, पुरान, सम्भु, हनूमान,
सेष, हेरंब गावैं गुन-कदंब राम के ।
कुंभज, भुसुंडि आदि सतुहादि, छत्रसाल,
सुगम कहे तें पै अगम परिनाम के ॥
भूलत भुलायेहूँ न भरत कौ नेह-नेम,
साँचे एक सोई हैं पपीहा राम-नाम के ।
जापी आठजाम के, प्रतापी राम-काम के, त्यौं
थापी धर्म-धाम के, कलापी घनस्याम के ॥ ४८ ॥
करहु सुकर्म सदा धर्म के धरनवारे,
पापनि हरनवारे जाहिर जहान में ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलौ बोल सत्य, करौ भूलिहूँ न अत्त जानि
'राम सर्वत्र,' ध्यान धारहु भगवान में ॥
कहै छत्रसाल, दीन पालिबे की बान धारौ,
मानियौ प्रमान लिखी बेद औ पुरान में ।
दाया में बसतु राम सकल सुधर्मनि में,
एती पहिँचान भली करुना-निधान में ॥ ४९ ॥
सरन निबाहुवारे, प्रबल सुबाहुवारे !
ध्यावतु छतारे तुम्हैं उमँगि उछाहु सों ।
असुर कतारे जोर जोमवारे डारे मारि,
जारि डारे लंक में अतंकवारे चाहु सों ॥
डारे सिंधु पूर में जहूर जुल्मवारे भारे
भारे भट निपट निकारे गारे ताहु सों ।
'जैति-जै' उचारे देव मुदित नगारे दै-दै
देखैं, गयौ रावन-उछाहु बीस बाहु सों ॥ ५० ॥
सीता-नाथ, सेतु-नाथ, सत्य-नाथ, संभु-नाथ,
नाथ-नाथ, देव-नाथ, दीन-नाथ, दीनगति ।
रघु-देव, जदु-देव, जच्छ-देव, देव-देव,
विश्व-देव, बासुदेव, ब्यासदेव, देव-रति ॥
रनबीर, रघुबीर, जदुबीर, ब्रज-बीर,
बल-बीर, बीर-बीर, ब्रतबीर, चारुमति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राग-पति, रंग-पति, रमा-पति, छता-पति,
राधा-पति, रस-पति, रसा-पति, रास-पति ॥ ५१ ॥
द्विजनि असीस होति, संपति समूह होति,
सुजसु-सुब्यूह होत मङ्गल सुसिद्ध है ।
कहै छत्रसाल, नाम-माल सी न माल आन,
छुवत बिसुद्ध मन, होति नव निद्ध है ॥
नीचपद-गामी कामी ऊँच-पद-गामी होत,
नाम कौ प्रताप पुन्यपूरन प्रसिद्ध है ।
आधि होति बध्य, भूरि ब्याधि होति रद्द, सद्य
साधि होत सिद्ध औ समाधि होति वृद्ध है ॥ ५२ ॥
गाई बिधि बेदनि में, व्यासजू पुराननि में,
बालमीकि रामायन परम प्रसङ्ग में ।
नारद बिसारद त्यों सारद औ सेष मिलि,
गाई है गनेसहूँ सुरेस शिव सङ्ग में ॥
पारावार-पार कों न पाय, छत्रसाल कहै,
मति-अनुरूप राम-सुजस उमङ्ग में ।
मेरी मति अल्प तेरे चरितकलाप सिंधु,
दीजै अवलंब, कृपासिन्धु ! या तरङ्ग में ॥ ५३ ॥
दीन कौ दयाल है अधार निराधारनि कौ,
रङ्क अरु गनी कौ निवाजक दुनी कौ है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम बल नामी होत, छाँड़ि बदनामी होत,
पोत बिनबारि ज्यों निजोत दीप फीकौ है ॥
छतसाल, जीकौ मत दायक, सु नीको नाम,
श्रीपति कौ, सङ्कर कौं, ब्रह्म-भाल-टीकौ है !
करि निरधार देख्यौ, बेदहूँ बिचारि देख्यौ,
सार देख्यौ सब कौ, न पार नाम ही कौ है ॥ ५४ ॥

गौरी प्रति संभु, भरद्वाज प्रति याग्यवल्क्य,
घटज सुतीक्ष्ण प्रति श्रवण कराई है ।
खग-पति कों काग, देवरिषि बाल्मीकजू कों,
बाल्मीकजूनैं लव-कुसहिँ पढ़ाई है ॥
राम रनधीरजू कों बीर धीर लौ-कुसनैं,
गाय-गाय बीन लै प्रबीन अरपाई है ।
एते ए प्रसङ्ग, बजरङ्ग कों सुनाई राम,
रामायन, छतसाल, लोक-लोक छाई है ॥ ५५ ॥

सवैया

मानुष कौ मुख मन्दिर सुंदर, थापहु जानकी-नाथ के नामैं ।
भेकनि के मुख में नहिँ सार, न स्वाद विवादनि की चरचा मैं ॥
सूकर स्वान कुवाकनि में बसि लाज न लागति या कुदसा मैं ।
भूप छता कहि, तोहिँ जनावतु नाम रटावतु आठहुँ जामैं ॥ ५६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवित्त

आगम निगम कह्यौ, कोविद कविनु कह्यौ,
कह्यौ है पुरान सहसानन निहोरि है।
सनक, स्वयंभु, संभु, सिवा औ गनेस कह्यौ,
नारद सुक कह्यौ पै न पायौ वा छोरि है॥
कहि-कहि हारे तीनि लोक-जीभवारे तहाँ,
चाहतु छतारे, प्रभु ! तेरी कृपा-कोरि है।
जोरि-जोरि बर्न चारु बर्नन, कृपालु ! कहौं,
तारन-तरन तुव कारन करोरि है॥ ५७॥

राम कहौ, भाई ! भाई-बन्धु में न भूलि जाहु,
भजन कबूले बिन दूजी नहिँ जगा है।
तोरे तें सनेह, मुख मोरे तें बनैगो नाहिँ,
जहाँ-तहाँ ठौर-ठौर याकौ जगमगा है॥
भूलौ मति आसन सिँहासन अवासनि में,
बसन-सुआसनि सुपासनि में दगा है।
सोई है सयाना जा कौ नाम सों लगा है तगा,
छतसाल, भूला ताहि सोई नर ठगा है॥ ५८॥

पारावार भौ को नाम-बोहित तिहारो भलो,
मानस-मलाह की सलाह पार जैबो है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुमति-बयार कों बराय बाँधि बादमान,
आपने स्वरूप कों पिछानि काम दैबो है ॥
दाया सो न बित्त और नित्त दैन, छतसाल,
पालिबो गरीबनि कौ श्रीपति हितैबो है ।
नाहीं तौ बितैबो जन्म भक्ति के बिनाहीं बृथा,
बोहितै रितैबो जैसे नीरधि चितैबो है ॥ ५९ ॥

सवैया

सम्मत बेद-पुराननि कौ मुनि ग्यानिन कौ मिलि एक मता है ।
नाम महाभव-सिंधु कौ बोहित जो हित मानि चढ़ै सुभता है ॥
संतत संत प्रसंसत नामहिँ, नामहीँ रामहिँ देत जता है ।
नाम-प्रताप सनाम छता, जोइ राम-रता सोइ पार-गता है ॥ ६० ॥

कवित्त

सहज बनाई सर्वभाँतिनि बिभीषन की,
अभै कृपालु कियौ जानि निज सरनई ।
रावन कौ मारयौ औ निकारयौ कौन राच्छस कों,
छतसाल, सकै राखि, ब्रह्माहू न निर्मई ॥
दीनहित बिरद बिचारि ताहि पच्छपाल,
बोलि 'लंकेस' कह्यौ, बाहँ कर गहि लई ।
सुनत भरोसो होत पोसो होत, तौ सो कौन,
मोसे कूर कायर कुराही की बनि गई ॥ ६१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभु-अवतार कौ न पायौ पार करतार,
जा कर बनायौ जौ त्रिलोक तोम तूत है ।
सतत बिचारि त्रिपुरारि जाकौ नाम जपै,
साधिकैं समाधि नाधै नाम की बिभूत है ॥
प्रकृति-प्रधान राम-नाम धाम-धाम भ्राजै,
बिदित बनाय बेद-आगम अभूत है ।
त्रिगुन, त्रिकाल, तीनि लोक, तीनि देव कहैं,
छत्रसाल कहै, रहै वाही कर सूत है ॥ ६२ ॥
दैबो नित्य उचित, बिचारि देखौ, सबही कों,
लैबो है उचित एक साँचो नाम राम कौ ।
मुदित गरीब कों निवाजै गाढ़ गाढ़ा परैं,
स्वामि-धर्म साजै सो बसैया परधाम कौ ॥
मेरो कह्यौ नाहिँ, बेद-आगम कहत आये,
दाया महँ बासु, छत्रसाल, धर्म-ठाम कौ ।
पेखनो सो बिधि कौ प्रपंच चित्र-लेखनो सो
जैहै मिटि, रैहै, जू ! रुचैया सत्य नाम कौ ॥ ६३ ॥
दिग्गज दुचित्त चित्त सोचत पुरंदर भे,
आजु मेरे करि कों का भिच्छुक बिलसिहैं ।
देत गज-दान भूप दसरथ राज आज,
राम-जन्म भये कौ बधावनो हुलसिहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाथी लै हजारन के हलके सु जाचक हूँ
आछे अलकेस मनां आयकैं सुबसिहैं।
गोय लै गनेस गिरिजा सां, छतसाल कहै,
गज के भरम तें भिखारिन बगसिहैं* ॥ ६४ ॥

सवैया

चाहैं तौ मेरु करैं रजतें, रज रंचक चाहैं तौ मेरु समाहैं।
जे जन पालतीं, ख्यालतीं ख्यालन तीनिहूँ लोकन की महिमा हैं ॥
छतसाल कहै, तिनकी उपमा कहि को, कलपद्रुम कामदुघा हैं।
हैं भव-भीर की मेटन पीर की श्रीरघुबीर समर्थ की बाहैं ॥ ६५ ॥

दोहा

जप तप संयम यम नियम, छता, निगम नित गाव।
कोटिन अपराधी तरे, केवल नाम-प्रभाव ॥ ६६ ॥
राम-नाम नहिं लेत है, बकत बृथा, छतसाल।
जिमि दादुर-कुल कमल तजि, भखत कुकीट कराल ॥ ६७ ॥
सुहृद कीस केवट करे, पल्लव करे पखान।
छतसाल, राजा करे, सरन बिभीषन जान ॥ ६८ ॥
मन बुधि चित्त इकंत करि, हंस करहु निज हंस।
छतसाल, या बिधि द्रवहु, हंस-बंस-अवतंस ॥ ६९ ॥

---

* भूमिका देखिए।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीहरिः

हनुमद्-विनय

मल्ली*

कहिबो उन सों मुख बाहिर की, मन की नहिँ जानत ताहिँ जनावैं।
छतसाल कहै, उर की पहिँचानत ताकहँ को कहि कर्म सुनावैं॥
कहि नेति बखानत हैं स्रुति सेष तहाँ कवि कोविद कौन गिनावैं।
हनुमान! तुम्हैं हम से खल पामर दंतकथा कहि आजु मनावैं॥ १॥

मदिरा†

गावत श्रीरघुबीरहिँ बीर सुध्यावत श्रीरघुबीर बली।
राम-प्रसाद-प्रताप बली करि दाप हने मनुजाद छली॥
भूप छता के बली हनुमान करै सरनागत की सु भली।
बेद भनैं, धनि बायु-तनै, तुम सों लगी धर्म-मृजाद-गली॥ २॥

गंगाधर‡

लीजिये नाम ताकौ सदा सर्वदा,
नर्मदा मोद-दा अंजनी-लाल है।

---

* इसे सुन्दरी और सुखदानी भी कहते हैं।
† इसे मालिनी, उमा और दिवा भी कहते हैं।
‡ इसे लक्ष्मी और खंजन भी कहते हैं।

In Public Domain, Chambal-Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानकी-नाथ के काज सारे महा,
रुद्र-औतार, भौ-तार, गोपाल है ॥
दास की आस पूजै, छता, मो हितै,
हेरि दै कै कृपा-कोर, श्रीभाल है ।
स्वर्न-सैलाभ-संकास बालार्क-भा,
बीर हनुमंत सो सबु कों घाल है ॥ ३ ॥

मकरंद§

प्रभात-प्रभाकर सो दरसै बपु तुंड प्रबाल अखंड लजानै ।
अजान तुम्हैं पहिंचानत ठीक, जथा सिसु मातु-पितै पहिंचानै ॥
सनातन की यह रीति, छता, सरनागत की परतीति प्रमानै ।
बिभीषन कौ दुख देखि प्रभंजन-नंदन लंकहिँ दीन कृसानै ॥४॥

डमरू

गिरि-धर गिरि-चर प्रभुवर-उर-धर,
रघुवर-चर-वर, जय जय जय-कर ।
प्रभु-पद-रज-धर, जय-धुज-कर-धर,
जय जय जसधर, जय भव-भय-हर ॥
जयति बिजय-धुज छतहिँ करहु कुज;
जयति जयति अज ! जय मम मन भर ।

§ इसे माधवी, मंजरी और वाम भी कहते हैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जय जय पवन-तनय त्रिभुवन कह,
जय प्रनमत सब पद सिर धर-धर ॥ ५ ॥

अरसात

अंगद कों मिलिकैं हनुमंत मिल्यौ पुनि बानर-भालु-समाज कों ।
कूदि चढ्यौ गिरि सुन्दर पै जन-भूप, छता, सुर-राजहु राज कों ॥
लंक बिलोकति मो कहँ अद्रि समुद्रक छुद्र हमें प्रभु-काज कों ।
रावन राजहिं देखतहीं करिहौं उतपातहिं लंक-अकाज कों ॥ ६ ॥

सारिणी*

समाचार चाहौ भले तौ महाबीर कों
पायकैं पाय नीकें गहौ, जू ।
सुनौ प्रान पाँचो हमारे, हमारो मतो,
जानकी-सोक-हा कों कहौ, जू ॥
बड़ी ठौर की पौर कौ सेयबो ठीक है,
नीक है जो चहौ सो लहौ, जू ।
तजै अंजनी-लाल कों जानि, छत्ता कहै,
सो अघा घोर जानौ, बहौ, जू ॥ ७ ॥

मुक्तहरा

'महाबलि हौ, हनुमंत !' कह्यौ सिय-कंत कृपा करि राजिव-नैन ।
'रिनी हम, तात ! तुम्हार सदा, न अदा तुम तें, हम भाखत बैन ॥

* चरखारी की प्रति में इसका नाम 'महता सवैया' दिया है । इस से 'सिंह विक्रीड़' मिलता है । अंतर इतना ही है कि उसमें ९ यगण होते हैं, और इस में ८ यगण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चहौ सु लहौ तुम भक्त-सिरोमनि ! तो मन में मम भक्ति-सुऐन ।'
छता, कहि जै जय सीस नयौ करुनाकर के कर सों बर लैन ॥८॥

चन्द्रकला †

करिये, प्रभु ! सो प्रभुता करिकैं,
प्रभुता करिकैं गिरि द्रोन लियौ ।
सुति साखि बिलोकि बखानत जानत,
सेषहिँ आपु सजीव कियौ ॥
सुख साजि सुकंठ बिभीषन कों,
प्रभुता करिकैं, प्रभु ! राज दियो ।
सुनि, भूप छता बिनती बिनवै,
लघुता-बस दास धिकार जियौ ॥ ९ ॥

सुन्दरी

न डरे जब सिन्धु तरे, प्रभु ! छाँह गहैं न डरे स्वर्भानु की मातै ।
न डरे सुरसै मग आय अरी, गढ़ लंक छरी छरि देव-अरातै ॥
न डरे गिरिद्रोन-उपाटन में, न डरे मग ब्यूह अदेव के घातै ।
प्रभु के सब काज किये सब भाँति, छता जन के अरि क्यों न निपातै ॥१०॥

मकरन्द

किये प्रभु-काम, छता, बसुयाम हियेँ सिय-राम मुकाम करैँ, जू ।
महाबलवान बिजै-जयमान, सदा भगवान भुजानि भरैँ, जू ॥

† इसे दुर्मिल भी कहते हैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदेव रु देव सबै छबि देखि कँपै डरपैँ नित ध्यान धरैँ, जू।
लहैँ सुख सान्ति सुभागनि अंजनि-नन्द के आय जे पाय परैँ, जू॥११॥

कवित्त

सरन तिहारी लई साँची सुनि, राम-दूत !
तेरो चहुँ, दीनपाल ! दीरघ सुजसु है।
उचित बिचारि छत्रसाल तेरे द्वार आयौ,
हा-हा लौं बनै पाय परिबे लौं स्वबसु है॥
आपुनो-बिरानो भलो बुरो सबै जानि परै,
मोकों कहा भयौ एती जानत हवसु है।
समय परें साँकरे में हाँकरें निसाँक रे,
सरन बुलाये कोऊ मारत न अंसु है॥ १२॥

लया*

त्राहि हमैं, सिव ! सोक-बिमोचन,
पाहि हमैं, प्रभु छेमङ्कर।
काज किये करुनाकर के,
प्रतिपालि, प्रभो ! प्रभु-नेमङ्कर॥
द्वै कर जोरि छता प्रभु ओर,
निहोरि कहै, जय, हेमङ्कर।

* इस छन्द का यही नाम चरखारी की प्रति में भी मिलता है। ज्ञात नहीं, इसका अन्य नाम और लक्षण क्या है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाय न बादि फिरादि कहूँ,
यह गावत हैं नित बेदद्धर ॥ १३ ॥

आभार

संसार कों प्यार है आपुनोई भलो,
आपु कों दास की लाज कौ प्यार ॥
आसाहिँ पूजै बदैं बेद चारों सदा,
अंजनी-बात-बिख्यात-कोमार ॥
बानैत बीरं, बिभो ! धारि संग्राम जै,
जीति लंकाहिँ पाथोधि कै पार ।
त्राता ! तिहारे परै पाय छत्ता, अहो !
वायु-लाला ! लखौ मो समाचार ॥ १४ ॥

किरीट

संकि रह्यौ तुम कों लखिकैं मन संकर-दास भयङ्कर रावन ।
गावत गीत पुनीत सदा, तुव ध्यान मुनी-मन-मोद-बढ़ावन ॥
जानकि-सोच-बिमोचन कों उर धारि, छता, अरि-धार-नसावन ।
सङ्गर-जै-कर श्रीमहबीर-पताकहिँ ताकहि मो मन-भावन ॥ १५ ॥

आभार

काकोदरी सिंहिका लंकिनी कातरी,
ज्यों छरी, नाथ ! त्यों वीर्य विस्तारि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो मोहि हीनो तकै देखि नाहीं सकै,
ताहि कों कालनेमादि सो गारि ॥
है गर्व जाकों, कहै छत्र ताकों, प्रभो !
लङ्क-पज्जारिनी पूँछ सां जारि ।
देखें तुम्हैं गीध सम्पाति कें पंख भे,
देव निस्सङ्क भे, सो हियें धारि ॥ १६ ॥

सारिणी*

नमामा महावार वीराग्र, मेरो महा
बीर के नाम सों काम हो बीस ।
महाबीर श्रीराम के नाम कौ रूप,
सुग्रीव जानैं कियौ बानराधीस ॥
महाबीर, गम्भीर है ज्ञान में, ध्यान में,
सान संग्राम में, सत्रु कै खीस ।
महाबीर कीजै छता आपुनो दास,
विश्वास कै भक्त, भक्तान के ईस ॥ १७ ॥

मुक्तहरा

बिभीषनै राजु सुकण्ठहिँ राजु, किये रघुराजहुँ के दुख दूर ।
समर्थ अनंत अहैं हनुमन्त, छता, प्रभुता सुनि भो सुख भूर ॥

*इस छन्द को भी दोनों ही प्रतियों में सारिणी लिखा है, यद्यपि संख्या ७ के छन्द से इसमें, अन्त में, एक लघु अधिक है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थपे उथपे, उथपेहुँ थपे, रजतें किय मेरु, औ मेरु तें धूर।
बड़े लघुहूँ करि देत बड़ो, जिमि राम किये बड़ भालु लँगूर ॥ १८ ॥

दंडक

नमो बात-संजात कों, अंजनी-तात कों,
आदि-अंतै-प्रजंतै परा प्रीति सों।
कृपा-पाल श्री-कंत कौ संत भाखैं यहै,
स्वर्न-सैलाभ-संकास की रीति सों ॥
गहै पाय तेरे, छता, छेमदा प्रेमदा
रीति सों, नीति सों, गीति सों, प्रीति सों।
महाबीर बीराग्र पाथोधि लीला तरयौ,
ना डरयौ आतपा-सीत की भीति सों ॥ १९ ॥

क्षुधा

गोपाल के पाय कौ ध्यायबो धन्य,
गोपाल कौ गायबो धन्य, भाई।
गोपाल श्रीअंजनी-लाल जैमंत,
जो गायहै पुंस, ताकी बड़ाई ॥
वारीस कों लंघि लंका जराई,
बिजै रामकी रावनै जा सुनाई।
गोपाल श्रीअंजनी-लाल सो धाय
कीजै, कृपा-नाथ ! छत्ता-सहाई ॥ २० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मत्तगयन्द

जैकर राम-धुजा-धर देव, बिजैकर देव, दया करि हेरो ।
हे सरनागत-पालक देव, अधीननि कों तुव ठौर बड़ेरो ॥
संकट-मोचन लोचनपिंग, महाबल-सिंध ! हरौ दुख मेरो ।
आरत-दीन-पुकार सुनौ अब, तो बिनु काम नहीं सब केरो ॥ २१ ॥
तुम कों, हनुमंत ! कहैं सुर संत निरंतर राम करैं दाया ।
निज राजु दियौ रघुराजु तुम्हैं सरजूपुर कौ स्रुति में गाया ॥
महराज, करौ चिरराज छता, जन पालहु मोह हरौ माया ।
प्रभु-नाम-प्रताप तन्यौ सिर छत्र, रहौ जन-माथ सदा छाया ॥ २२ ॥

मल्ली

तुम सो प्रभु और, कहौ तुमहीं, केहि ठौर बसैं, जेहि जाय निहोरौं ।
तुर हौ, फुर हौ, सबलायक हौ, खल ऊलर कौ कह गूलर फोरौं ॥
बिन राम-रटी रसना मुख के अब सम्मुख जाय कहा कर जोरौं ।
सिय-राम के नामहिं राखु, छता, सुनु, वायु-तनै ! तुव आस न छोरौं ॥२३॥

किरीट

राम-बिजै-कर के धुज पै हनुमान लसैं मनु प्रात-दिवाकर ।
केतक पामर पाय परैं, बहु आय गिरैं कहि 'पाहि, दया-कर' ॥
राम-प्रताप-भरयौ तनु राजत, राज छता, प्रभु ! पातु प्रभाधर ।
किंकर जानि हमैं प्रतिपालहु, संतत तोहिं प्रसंस सियावर ॥ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

 Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवित्त

जैसे एक अजया कों अदया अहीर तज्यौ,
जरा जानि निदरि, कहा काजु सरनै है ?
ठानिकैं मरन सो केहरि के सरन गई,
'है प्रतिपालनै, कै हाड़-माँस चरनै है ?
बोल्यौ मृग-राज, 'हौं तौ सरन-समर्थवारो,
छतसाल, पालि तोकों सरन धरनै है।'
वह मृगराज, आपु साखा-मृग-राज-राज !
बिसे बीस, ईस ! मोहिँ सरन करनै है ॥ २५ ॥

हंसी

जै, मा-नाथं-गीता-गाथं, सुमति-सदन, तुव चरन-सरन ।
जै जै जै श्री-सोकं-नासं, दुखन-दवन-कर, सुखन-भरन ॥
राघौजू कौ भ्राता-त्राता, छतहिँ मुदित-कर, दुसह-दरन ।
लंका लीलाहीं लील्यौ तैं, कहत जयतु जन, बिजय-करन ॥ २६ ॥

मदिरा

रावन-मान गयौ, न रह्यौ बल, सान गई हनुमान-करै ।
भ्रात बिभीषन सो इनके बल, केवल मोहिँ ए जानि परै ॥
गीध सपच्छ भयौ जेहिं देखत, भूप छता छबि ताकि तरै ।
तापस-साप गई भय दूरि, प्रताप महा कहि पाय परै ॥ २७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीर्घ *

सीतारामै पूज्यौ जा नैं,
सीतारामै बूझ्यौ जा नैं,
ताकों का संसारी त्रासा ।
हारे कै-कै लेखा-नाथा
लेखा, सेषा, धाता ज्ञाता,
औ संभू कैलासा-बासा ॥
जाके काजैं ध्रू नैं ध्यायौ,
सो वा नीको फीको जान्यौ,
पाल्यौ-लाल्यौ 'छाता' दासा ।
सिंधै नाको, साको बाँको,
राघौजू कौ खासा दासा,
जै जै, मोकों ताकी आसा ॥ २८ ॥

सोने कैसो सैला ! तौकों
बन्दौं, नन्दौं ही तें जी तें,
तू पालै है मंसा मेरी ।
तेरी जै जै, तेरे दासा,

* इस नाम का मुझे अन्यत्र कोई छन्द नहीं मिला । इसमें २४ गुरु आये हैं, और ८, ८, ८ पर यति है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यागैं हैं भौ-आसा-त्रासा,
संतोषै है आभा तेरी ॥
छाता, लंका लीला मारी,
संभू-औतारी नैं टारी
सारी भै संसारी केरी ।
हे संपाती-त्राता, पाता !
तू है धाता, वाता-जाता !
सो है क्यों मो बेरी देरी ॥ २९ ॥*

कवित्त

बानेबंध, धरम-धुरीन, दीनबंध, सत्य-
संध, सुख-सागर, त्रिलोक में बितान से ।
ज्ञान-गुन-धाम, लोक-लोकनि सनाम, काम
अभिमत-दैन, कल्प-बिटप महान से ॥
छत्रसाल, धेनु-धरा-भूमिदेव पालिबे कों,
असुर-समूह घालिबे कों बज्रपान से ।
भान सीतमान से प्रकासमान, पासवान
साहब श्रीराम के मुसाब हनुमान से ॥ ३० ॥

---

* चरखारी की प्रति में, इस छंद में, पाठान्तर है । उसमें ८, ८, ७ पर यति आने से २३ गुरु हैं, और छंद का नाम 'क्षमा' दिया है । अन्यत्र, 'क्षमा' का यह लक्षण नहीं पाया जाता है । 'क्षमा' तो 'न न ज त ग' या 'न न त त ग' का होता है । पन्ना की प्रति में तो दोनों (२८ और २९) छंद एक ही लक्षण के हैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कठिन कुअंक बंक मेटन-समर्थ तुहीं,
करत त्रिताप दूरि पाप परिताप तैं।
अवध-भुवाल-दास, पूरन-प्रताप-भर्यौ,
डर्यौ नाहिँ, टर्यौ नाहिँ रावन के दाप तैं॥
गजब गुजार्यौ, लंक बंक गढ़ जार्यौ, दीह
बिपिन उजार्यौ, अच्छ मार्यौ एक थाप तैं।
कहै छत्रसाल, मोहिँ पालिबो तुम्हारे हाथ,
बालक अबोध कों प्रबोध होत बाप तैं॥ ३१॥
सकल पुरान बेद सास्त्र राज-नीति जानौ,
काव्य कोस, ठोस सर्वगुननि, अनंत हौ।
कहै छत्रसाल, राम-बिजय-निसानु, सर्व
ज्ञान के निधानु, भानु-सिष्य भगवंत हौ॥
दुस्तर दुरंत दुराधर्ष तम-चारिन के
घालक, कृपालु जन-पालक सुसंत हौ।
दुरित-दुरास-दुख-दारिद बिदारु मेरे,
अजय अकंपनारि! बीर बलवंत हौ॥ ३२॥
सरन सुदेहि सीय-सोच के हरन, हरी!
तोहिँ, बदैं बेद, दीनजन की कसक है।
मो सो दीन-दूबरो न, सूबरो मिलैगो तो सो,
और ठौर गयें मोहिँ होति, जू! असक है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहै छत्रसाल, सिंह स्यार के अधीन होय
कहै दुख रोय, कहा सिंह की ठसक है ।
परै बादि मेरी जो फिरादि दादि दीनबंधु !
तेरे द्वार, ठीक मोहिँ धरनी धसक है ॥ ३३ ॥
कृपन-दुवार जाय भरम गँवायबो भो,
रसन रटाय दाँत काढ़िबो बृथा गयौ ।
तू तौ दानवीर महावीर हनूमान धीर,
विजय-ध्वजेस-द्वार कासु न भलो भयौ ॥
कहै छत्रसाल, पालि, लाल अंजनी के, हमैं,
सरन-सुपाल बीर बिरद भलो ठयौ ।
मारिहौ तौ लैहौं पद परम, अनाथ-नाथ !
पालिहौ तौ ह्वैहै मोर कुमति-बिनास यौ ॥ ३४ ॥
असन अघाय पाय तृप्त होय भूखो जब,
अगद-सुमूरि भूरि तबहिँ चखा करै ।
बसन-बिहान बस्त्र पायकैं सिहावै जब,
छत्रसाल, तबै सीत आतप लखा करै ॥
बाल-ब्रह्मचारी तू ही धर्म-धुर-धारी धीर,
गहन मलेच्छ फारि क्यों न दो फका करै ।
जगत दिखाय कहै, 'सूर कौ प्रकास भयौ,'
सूर तबै जानै, जब आँखनि दिखा परै ॥ ३५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा

जाहिर हाल जहान कौ तुम्हैं, अंजनी-लाल ।
दीन-दयाल ! करौ न क्यों छत्रसाल-प्रतिपाल ॥ ३६ ॥
छत्रसाल, सिय-कंत-प्रिय, संतत संत भनंत ।
जय अनंत-दुख-अंत-कर, बल अनंत हनुमंत ॥ ३७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah